डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी

जल बूँद

बाल कविता

आसमान से गिरकर बूँद,
रिमझिम-रिमझिम गाती।
टप-टप तड़-तड़ ध्वनि करती,
धरती वृक्षों में गिर जाती।।

बिना जल के जो व्याकुल थे,
पेड़-पौधों की प्यास बुझाई।
पाकर के साथ इसका,
धरती माता बहुत हरसाई।।

नदी-नालों का पाकर संग,
सागर तक पहुंच जाती।
रिस-रिस कर धरती के भीतर,
भू-जल का स्तर बढ़ाती।।

हरियाली चारों ओर छा जाती,
धरती के रज कण-कण में
खुशियों की लहर दौड़ती,
सभी प्राणियों तक क्षण में।।

बहता जल

कल-कल करता बहता पानी,
सुनाता अपनी जीवन कहानी।

हर मौसम-ऋतु में दिन-रात,
देता रहता मैं सबको साथ।

दुःख झेलना समझता मैं धर्म,
करता रहता नित पुण्य कर्म।

हर प्राणी की प्यास बुझाता,
सिंचाई के भी काम हूं आता।

हिम शिखरों से रिस-रस कर,
गति करता आगे बढ़ता फिर।

कंकड़-पत्थर भी बहते साथ,
घिसकर बदलता उनका गात।

जब-जब होती तेज बरसात,
मिट्टी बहती बहुत मेरे साथ।

जगह-जगह वह बिछती जाती,
धरती मां को उपजाऊ बनाती।

आती वसुन्धरा में खुशहाली,
झूमती फसलें और सब डाली!

धुलता हूं सभी जनों के पाप,
हरता हर तन-मन का ताप!

सीखा कभी न जीवन में रुकना,
अरि के सम्मुख हारकर झुकना।

बनते मार्ग में जब पत्थर रोड़ा,
घबराता नहीं मैं तब भी थोड़ा!

तन-मन की शक्ति को दूनी कर,
आगे बढ़ता रहता हूं सर-सर।

मैं न कभी भी हार स्वीकारता,
परोपकार करना स्व धर्म मानता।

जो आता है सदा दूसरों के काम,
वही होता है जग में सच्चा इन्सान।

अपना उद्गम छोड़कर के आता,
सागर में जाकर के मिल जाता।

संपर्क करें:
डॉ. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
ग्राम/पो. पुजारा गाँव (चन्द्र वदनी)
द्वारा-हिण्डोला खाल
जिला-टिहरी गढ़वाल-249 122, उत्तराखंड
मो. 9690450659
ईमेलः dr.surendraduttsemalty@gmail.com